महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का तेल एवं गैस संरक्षण पखवाड़ा 2013 के शुभारम्भ कार्यक्रम में उद्बोधन

स्थान :- भोपाल, दिनांक :- 15 जनवरी, 2013 समय :- प्रात: 11 बजे

तेल उद्योग की विभिन्न संस्थाओं द्वारा 15 जनवरी से 31 जनवरी 2013 तक आयोजित होने वाले "तेल एवं गैस संरक्षण पखवाड़े" के उद्धान के अवसर पर उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है।

तेल एक प्राकृतिक सम्पदा है एवं अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं के चलते हम निरंतर इस संपदा का दोहन करते जा रहे हैं। सभी यह जानते हैं कि तेल सदा के लिये उपलब्ध नहीं रहने वाला है इसलिये इस अमूल्य संपदा के संरक्षण और इसके विवेक पूर्ण उपयोग की जिम्मेदारी भी पूरी तरह से हमारे कंधों पर ही है। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह तेल संरक्षण जैसे सामयिक और महत्वपूर्ण विषय के प्रति सजग हो और तेल बचत की दिशा में अपना पूर्ण योगदान प्रदान करें। प्रत्येक शिक्षित नागरिक का यह उत्तरदायित्व बनता है कि न केवल खुद बल्कि दूसरों को भी तेल संरक्षण के लिये प्रोत्साहित करें।

मुझे सबसे ज्यादा खुशी इस बात की हो रही है कि तेल विपणन के क्षेत्र की कंपनियों ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है और इस वर्ष भी पूरी तरह से इस संदेश को आम जनता में प्रचारित और प्रसारित करने क प्रति दृढ़ संकल्पित है। हमारा देश सदैव से एक कृषि प्रधान देश रहा है। फिर भी, पिछले कुछ वर्षों से हमने औद्योगिक क्षेत्र में भी काफी उन्नति की है। साथ ही हमारे रहन-सहन के स्तर में भी तरक्की हुई है। इन सभी के प्रभाव से तेल खपत में भी बहुत अधिक वृद्धि हुई और अपव्यय भी बढ़ा है।

एक समय ऐसा था जब हमारे सभी शहरों, कस्बों और गांवों में ज्यादातर साइकिलों का ही चलन था और आम आदमी के लिए वही आवागमन का साधन था। जन वाहन के रूप में साइकिल रिक्शा उपलब्ध रहा करता था। समय बदला और आदतें भी बदल गईं। अब साइकिल का स्थान मोपेड, स्कूटी, स्कूटर और मोटर साइकिलों ने ले लिया है। दो किलोमीटर भी जाना हो तो आज हम मोटर साइकिल का प्रयोग करने से हिचकते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी आज दुपहिया वाहनों पर सवार नजर आते हैं। इससे तेल की बड़ी मात्रा में अनावश्यक खपत बढ़ गई है। शारीरिक श्रम और थोड़ा सा समय बचाने के लिए हम बड़ी मात्रा में अपने संसाधनों का दुरूपयोग करने लगे हैं और ऐसा करना अपनी शान समझते हैं। चीन और जापान जैसे देशों ने

अपने नागरिकों को एक निश्चित दूरी तय करने के लिए पैदल चलने की हिदायत दी है। हमारे लिए भी ऐसा ही कुछ करना आवश्यक है।

इस अवसर पर मैं विशेष रूप से जोर देकर कहना चाहूंगा कि हमारे प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं, इनका पूरी तरह सावधानी पूर्वक उपयोग ही इन्हें ज्यादा समय तक उपलब्ध बना कर रख सकते हैं और ऐसा हम सभी के सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। हमें चाहिए कि एक ही दिशा में जाने वाले और एक ही समय मे आने जाने वाले पड़ोसी आपस में 'पूल वाहन'का प्रयोग करें। ऐसे ही स्कूल और कालेज के बच्चे भी अपने वाहनों का सीमित प्रयोग करें। आवश्यकता पड़ने पर एक ही वाहन से दो बच्चे स्कूल जायें।

इसके अलावा वाहन चलाने के तरीके भी इंधन की बचत में योगदान देते हैं। लाल बत्ती पर वाहन न बंद करना, लगातार ब्रेक व क्लच पर पैर रख कर गाड़ी चलाना, इंजन के रख रखाव पर ध्यान न देना आदि सभी बातें हमारे रोजमर्रा के जीवन में तेल और ईंधन के दुरूपयोग को बढ़ाते हैं। घरों में भी गृहणियों को अपने रसोई गैस की बचत के प्रति सचेत होने की आवश्यकता है। छोटी-छोटी ऐसी कितनी ही बातें हैं जिनका यदि ध्यान रखा जाय तो हम ईंधन की बचत कर बहूमुल्य प्राकृतिक खनिज बचा सकते हैं।

बूंद-बूंद से सागर भरता है। यदि आप और हम मिल कर निर्णय ले लें तो क्या नहीं हो सकता। मैं उम्मीद करता हूं कि इस प्रकार के पखवाड़े के आयोजन और तेल कंपनियों के सहयोग से समाज में जन चेतना जागृत होगी और लोग देश में उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करेंगे।

जय हिन्द।